



संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं प्राच्यभाषा विभाग
तथा
पण्डित गङ्गानाथ झा पीठ
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उ.प्र.)



त्रिदिवसीय अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन
(दिनाङ्क- 14, 15, तथा 16 दिसम्बर 2022)
विषय : भारतीय ऋषि-परम्परा : विज्ञान एवं विश्व-कल्याण”

संरक्षक
प्रो० सङ्गीता श्रीवास्तव
कुलपति
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

मुख्य-संयोजक
प्रो० रामसेवक दुबे
अध्यक्ष
संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं प्राच्य भाषा विभाग

संयोजक
प्रो० उमाकान्त यादव
आचार्य एवम् प्रभारी
पण्डित गङ्गानाथ झा पीठ

सह-संयोजक
प्रो० अनिल प्रताप गिरि
प्रो० प्रयाग नारायण मिश्र
संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं प्राच्य भाषा विभाग

क्रियान्वयन समिति

डॉ. निरुपमा त्रिपाठी
डॉ. रेनू कोछड शर्मा
डॉ. कल्पना कुमारी
डॉ. प्रतिभा आर्या
डॉ. विकास शर्मा
डॉ. प्रचेतस

डॉ. विनोद कुमार
डॉ. मीनाक्षी जोशी
डॉ. अनिल कुमार
डॉ. राघवेन्द्र मिश्र
डॉ. सन्त प्रकाश तिवारी

डॉ. लेखराम दन्नाना
डॉ. रश्मि यादव
डॉ. सतरुद्र प्रकाश
डॉ. ललित कुमार
डॉ. तेज प्रकाश

डॉ. सन्दीप कुमार यादव
डॉ. नन्दिनी रघुवंशी
डॉ. रजनी गोस्वामी
डॉ. आशीष कुमार
डॉ. वालखडे भूपेन्द्र अरुण

पञ्जीकरण

गूगल फार्म लिंक- <https://forms.gle/9Kn81n6g4UffPL6NA>
सम्पर्क सूत्र- 9415234851, 9415649441, 9415171430, 7200526855, 685057003



॥ इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वैभ्यः पथिकृद्भ्यः ॥

भारतवर्ष ऋषियों का देश है जहाँ वैदिक ऋषियों एवं मुनियों की सुदीर्घ और समृद्ध परम्परा दृष्टिगोचर होती है। वस्तुतः लोक-परलोक तथा ब्रह्म-विषयक सूक्ष्मातिसूक्ष्म चिन्तन द्वारा प्राणिमात्र के कल्याण की असाधारण भावना ने ही इन्हें 'ऋषि' के रूप में प्रतिष्ठित किया है। 'साक्षात्कृतधर्माणः ऋषयो बभूवुः' धर्म का साक्षात्कार करने वाले अर्थात् धर्म को आत्मसात् करने वाले ऋषि होते हैं अथवा 'ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः' ऋषि मन्त्रद्रष्टा हैं। ऋषियों ने परमात्मा के द्वारा उपदिष्ट वेदज्ञान को आत्मसात् कर सृष्टि के रहस्यों को स्वयम् अपरोक्ष किया तथा श्रुतिपरम्परया अपने शिष्यों को उस वेदज्ञान से अनुप्राणित कर ऋषि-परम्परा को अक्षुण्ण रखने का मार्ग प्रशस्त किया। इस प्रकार ऋषियों ने अपने विलक्षण ध्यान योग के बल पर पारलौकिक शक्तियों का अनुभव किया तथा अखिल ब्रह्माण्ड के सृष्टि-सिद्धान्त को मानव कल्याण हेतु प्रकाशित किया।

वस्तुतः ऋषियों का चिन्तन परम-विज्ञान है। इसके स्वरूप को आधुनिक विज्ञान के रूप में प्रचलित परिभाषा से नहीं समझा जा सकता है। आधुनिक विज्ञान केवल दृश्य पदार्थों को ही अपना विषय बनाता है तथा स्वनिर्मित वैज्ञानिक उपकरणों के द्वारा सिद्ध होने पर ही किसी तथ्य, सिद्धान्त, प्रयोग या परिकल्पना को विज्ञान सम्मत या विज्ञान के अन्तर्गत स्वीकार करता है। भारतीय ऋषि परम्परा द्वारा स्थापित विज्ञान वह विशिष्ट, विस्तृत एवं व्यापक ज्ञान है जो केवल मानव कल्याण- विषयक ही चिन्तन नहीं करता अपितु चराचर जगत् पर स्वयं को केन्द्रित रखते हुए विश्व-कल्याण को रेखाङ्कित करता है। समस्त प्राणियों में आत्मतत्त्व और आत्मतत्त्व में समस्त प्राणितत्त्व को समेकित करना ही ऋषि-चिन्तन का चरमोद्देश्य है। इसी परमोच्च आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान को ध्यान में रखकर अधुनातन परिप्रेक्ष्य में यह अन्ताराष्ट्रीय सम्मेलन प्रस्तावित है जो निश्चित ही चिन्तन और विद्वज्जगत् के लिए परम उपादेय सिद्ध होगा।

प्रायशः ऋषियों का मानव कल्याण में अपना विशिष्ट योगदान है। प्रत्येक ऋषि के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर अकादमिक विमर्श करने के साथ ही साथ मानव कल्याण में उनके विशिष्ट योगदान को प्रतिपादित करना और लोक को उससे अवगत कराना प्रकृत अन्ताराष्ट्रीय सम्मेलन का परम लक्ष्य है। शैक्षणिक जगत् और लोकव्यवहार में भारतीय ऋषियों का ज्ञान- वैशिष्ट्य सप्रमाण प्रकाशित होने से साम्प्रतिक समाज में मानव कल्याण का युक्तियुक्त मार्गदर्शन प्रशस्त होगा।

ऋषियों के महनीय जीवन-चरित की इसी धुरी पर आधृत त्रि-दिवसीय अन्ताराष्ट्रीय सम्मेलन- "भारतीय ऋषि-परम्परा : विज्ञान एवं विश्व-कल्याण" का आयोजन संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं प्राच्यभाषा विभाग तथा पण्डित गङ्गानाथ झा पीठ, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज द्वारा अधोलिखित प्रारूप के अनुसार दिनाङ्क 14, 15 एवं 16 दिसम्बर 2022 को किया जा रहा है।

प्रतिभागिता हेतु पञ्जीयन शुल्क

शिक्षक/प्रतिभागी - 2500/- रु. मात्र

शोधच्छात्र - 2000/- रु. मात्र

पञ्जीयन दिनाङ्क 30.08.2022 से प्रारम्भ।

आवासीय व्यवस्था केवल आमन्त्रित विद्वानों हेतु अनुमन्य है।



शोध-पत्र के प्रमुख विषय:

गवेषणात्मक विशिष्ट व्याख्यानों के साथ ही साथ विषय से सम्बद्ध शोध-पत्र भी आमन्त्रित हैं। सम्मेलन के प्रमुख विषय तथा अन्य उपविषय अधोलिखित हैं-

- मधुच्छन्दा
- मेधातिथि
- दीर्घतमा
- गृत्समद
- विश्वामित्र
- वामदेव
- अत्रि
- भरद्वाज
- वशिष्ठ
- कण्व
- भृगु
- अङ्गिरा
- श्रद्धा-कामायनी
- अपाला-घोषा
- वाक्-आम्भृणी
- विश्ववारा आत्रेयी
- अपाला
- पैलोमी शची
- पिङ्गल
- पतञ्जलि
- वाग्भट्ट
- महर्षि पाणिनि
- कात्यायन
- वररुचि
- यास्क
- सन्दिपनि
- दधिचि
- चरक
- सुश्रुत
- वराहमिहिर
- नागार्जुन
- भास्कराचार्य
- आर्यभट्ट
- चाणक्य
- बौधायन
- वात्स्यायन
- भरतमुनि
- मनु
- रैवक
- अष्टावक्र
- नारद
- गार्गी
- सत्यकाम
- लोपामुद्रा
- जनक
- याज्ञवल्क्य
- यम
- आरुणि
- जमदग्नि
- जैमिनि
- बादरायण
- मार्कण्डेय
- परशुराम
- दुर्वासा
- अगस्त्य
- वेदव्यास
- शुकदेव
- शौनक
- वाल्मीकि
- जाबालि इत्यादि

- अपौरुषेय शास्त्रों के ऋषि एवम् उनका मानव कल्याण में विशिष्ट योगदान
- पौरुषेय शास्त्रों के ऋषि एवम् उनका मानव कल्याण में विशिष्ट योगदान
- काव्य एवं काव्यशास्त्रों के ऋषि एवम् उनका मानव कल्याण में विशिष्ट योगदान

- ❖ शोधपत्र-सारांश हेतु अन्तिम दिनाङ्क - 15.09.2022
- ❖ पूर्णशोधपत्र हेतु अन्तिम दिनाङ्क - 30.09.2022
- ❖ शोधपत्र-सारांश तथा पूर्णशोधपत्र भेजने के लिये मेल आई डी ausanskrit2021@gmail.com
- ❖ संस्कृत/ हिन्दी - Arial Unicode MS (font size- 14, single space).
- ❖ English – Times New Roman (font size- 12, single space)



संस्कृत-पालि-प्राकृत-प्राच्यभाषाविभागः
अथ च
पण्डितगङ्गानाथझापीठम्
इलाहाबादविश्वविद्यालयः, प्रयागराजः(उ.प्र.)



त्रिदिवसीयमन्ताराष्ट्रीयसम्मेलनम्
(दिनाङ्कः - १४, १५, १६ दिसम्बरमासः २०२२)
विषयः - "भारतीय ऋषिपरम्परा - विज्ञानं विश्वकल्याणञ्च"

संरक्षकः
प्रो०सङ्गीता श्रीवास्तव
कुलपतिः
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

मुख्यसंयोजकः
प्रो० रामसेवकदुबे
अध्यक्षः
संस्कृत-पालि-प्राकृत-प्राच्यभाषाविभागः

संयोजकः
प्रो० उमाकान्तयादवः
प्रभारी आचार्यश्च
पण्डितगङ्गानाथझापीठम्

सह-संयोजकौ
प्रो० अनिलप्रतापगिरिः
प्रो० प्रयागनारायणमिश्रः
संस्कृत-पालि-प्राकृत-प्राच्यभाषाविभागः

क्रियान्वयनसमितिः

डॉ. निरुपमात्रिपाठी
डॉ.रेनूकोछडशर्मा
डॉ.कल्पनाकुमारी
डॉ.प्रतिभाआर्या
डॉ.विकासशर्मा
डॉ.प्रचेतसः

डॉ.विनोदकुमारः
डॉ.मीनाक्षीजोशी
डॉ.अनिलकुमारः
डॉ.राघवेन्द्रमिश्रः
डॉ.सन्तप्रकाशतिवारी

डॉ.लेखरामदन्ना
डॉ.रश्मियादवः
डॉ. सतरुद्रप्रकाशः
डॉ.ललितकुमारः
डॉ. तेजप्रकाशः

डॉ.सन्दीपकुमारयादवः
डॉ.नन्दिनीरघुवंशी
डॉ.रजनीगोस्वामी
डॉ.आशीषकुमारः
डॉ.वालखडेभूपेन्द्रअरुणः

पञ्जीकरणम्

गूगल-आवेदनसङ्केत इति - <https://forms.gle/9Kn81n6g4UffPL6NA>
सम्पर्कसूत्रम् - 9415234851, 9415649441, 9415171430, 7200526855, 9685057003



॥ इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वैभ्यः पथिकृद्भ्यः ॥

ऋषीणां देशो नाम भारतवर्षम् । अत्र वैदिककालादेवर्षीणां मुनीनाञ्चात्यन्तं सुदीर्घा समृद्धा च परम्परा दरीदृश्यते । वस्तुतोऽभ्युदयनिःश्रेयसविषयकेण सूक्ष्मातिसूक्ष्मचिन्तनेनाखिलविश्वस्य सर्वविधकल्याण-विषयिकासाधारणभावनैवर्षीणां वैशिष्ट्यं प्रत्यत्र प्रयोजिका यया ते “साधारणमनुष्येभ्य ऋषयो बभूवुः”, तथा च “साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः” “ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः, न तु कर्तारः” । ऋषयोऽपौरुषेयात्मकं वेदज्ञानं निदिध्यासबलेनाऽत्मसात्कृत्य सृष्टेश्च रहस्यानि मूलतत्त्वानि च स्वकीयेन महाप्राणबलेन गुरुशिष्यपरम्परा-शिक्षणप्रविधिना स्वशिष्येषु तद्वेदज्ञानमक्षुण्णं स्थापयितुं मार्गं प्रशस्तं चक्रुः । इत्थमृषयस्वविलक्षणध्यानयोगबलेन पारलौकिकीं शक्तिमपि समनुभूयाखिलब्रह्माण्डस्य सृष्टिसिद्धान्तान् मानवकल्याणाय प्रकाशयाञ्चक्रुः ।

वस्तुतः ऋषीणां चिन्तनमिदं परं विज्ञानं वर्तते । विज्ञानस्याऽस्य स्वरूपं वैशिष्ट्यञ्चाधुनिक-विज्ञानस्वीकृतेन पाश्चात्यलक्षणविशेषेण नावगन्तुं शक्यते । आधुनिकं विज्ञानन्तु प्रायशो दृश्यपदार्थानिव स्वीकुरुते । तथाहि वैज्ञानिकैस्वनिर्मितोपकरणैर्भौतिकान् पदार्थानिव बहुविधं सम्परीक्ष्य विविधैर्हेतुभिस्संसाध्य स्थाप्यन्ते निर्णयाः । ते सिद्धान्ता एव विज्ञानान्तर्गतं स्वीक्रियन्त आधुनिकैः ।

भारतीय-ऋषिपरम्परया स्थापितं विज्ञानं तादृशं विशिष्टं विस्तृतं व्यापकं वा ज्ञानमस्ति यन्मानव-कल्याणविषयकचिन्तनैस्साकं चराचरजगतस्सर्वविधकल्याणत्रिरूपयति । सकलप्राणिष्वात्मतत्त्वमात्म-तत्त्वे च सकलप्राणिदर्शनमेवर्षिचिन्तनस्य चरमोद्देश्यम् । इदं परमं विज्ञानमभिलक्ष्य साम्प्रतिके परिप्रेक्ष्य एतदन्ताराष्ट्रियं सम्मेलनं प्रस्तावितमस्ति । तन्निश्चितमेव समेषां कृते परमोपकारकं स्यादेव ।

प्रायशो भारतीय-ऋषिपरम्परायां प्रत्येकमृषीणां मानवकल्याणविषयकं विशिष्टं योगदानं वरीवर्ति । अत एव प्रत्येकं ऋषेर्व्यक्तित्वकर्तृत्वविषये शैक्षिकं विमर्शनं, लोकपरिज्ञानं तथा च तेषां मानव-कल्याणे विशिष्टयोगदानप्रतिपादनमन्ताराष्ट्रियसम्मेलनस्यास्य परमं लक्ष्यम् । साम्प्रतिके शैक्षिकजगति लोकव्यवहारे च भारतीय-ऋषीणां ज्ञानवैशिष्ट्यस्य सप्रमाणं विमर्शेन साम्प्रतिकसमाजो मानवकल्याणविषये यथोचितं मार्गदर्शनं प्राप्स्यति ।

ऋषीणां महनीयं जीवनमाधृत्य “भारतीय ऋषिपरम्परा : विज्ञानं विश्वकल्याणञ्च” इति विषयमधिकृत्य ‘इलाहाबादविश्वविद्यालयस्थ-संस्कृत-पालि-प्राकृत-प्राच्यभाषाविभागस्य पण्डित-गङ्गानाथझापीठस्य’ च संयुक्ततत्त्वावधानेऽधो-लिखितप्रारूपानुसारं द्वाविंशत्युत्तरद्विसहस्रतम-ख्रिष्टाब्दस्य दिसम्बरमासस्य चतुर्दशे, पञ्चदशे षोडशे च दिनाङ्केषु त्रिदिवसीयम् अन्ताराष्ट्रियं सम्मेलनं समायोज्यते ।

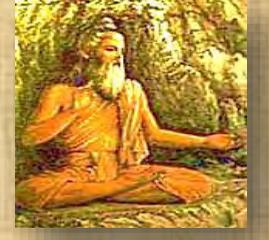
प्रतिभागितायै पञ्जीकरणशुल्कः

शिक्षकः/प्रतिभागी – २५००/- मात्रम्

शोधच्छात्रः -२०००/- मात्रम्

पञ्जीकरणं ३०.०८.२०२२ दिनाङ्कात् प्रारभ्यते ।

आवासीयव्यवस्था केवलम् आमन्त्रितविदुषां कृते भविष्यति ।



शोधपत्रस्य विषयाः -

गवेषणात्मकविशिष्टव्याख्यानैस्सह विषयेण सम्बद्धं शोधपत्रमपि आमन्त्रितं वर्तते। सम्मेलनस्य प्रमुखविषया अन्ये च उपविषया अधोलिखितास्सन्ति-

- | | | | |
|-------------------|---------------------|-----------------|-------------------|
| • मधुच्छन्दा | • वाक्-आम्भृणी | • वराहमिहिरः | • याज्ञवल्क्यः |
| • मेधातिथिः | • विश्ववारा-आत्रेयी | • नागार्जुनः | • यमः |
| • दीर्घतमा | • अपाला | • भास्कराचार्यः | • आरुणिः |
| • गृत्समदः | • पैलोमी-शची | • आर्यभट्टः | • जमदग्निः |
| • विश्वामित्रः | • पिङ्गलः | • चाणक्यः | • जैमिनिः |
| • वामदेवः | • महर्षिपाणिनिः | • बौधायनः | • बादरायणः |
| • अत्रिः | • वाग्भट्टः | • वात्स्यायनः | • मार्कण्डेयः |
| • भरद्वाजः | • पतञ्जलिः | • भरतमुनिः | • परशुरामः |
| • वशिष्ठः | • कात्यायनः | • मनुः | • दुर्वासा |
| • कण्वः | • वररुचिः | • रैकः | • अगस्त्यः |
| • भृगुः | • यास्कः | • अष्टावक्रः | • वेदव्यासः |
| • अङ्गिरा | • सन्दीपनिः | • गार्गी | • शुकदेवः |
| • श्रद्धा-कामायनी | • दधीचिः | • लोपामुद्रा | • शौनकः |
| • अपाला-घोषा | • चरकः | • सत्यकामः | • वाल्मीकिः |
| | • सुश्रुतः | • नारदः | • जाबालिरित्यादयः |
| | | • जनकः | |

शोधपत्रस्य उपविषयाः-

- अपौरुषेयशास्त्राणाम् ऋषयः तेषाञ्च मानवकल्याणे विशिष्टं योगदानम्
- पौरुषेयशास्त्राणाम् ऋषयः तेषाञ्च मानवकल्याणे विशिष्टं योगदानम्
- काव्यानां काव्यशास्त्राणाञ्च ऋषयः तेषाञ्च मानवकल्याणे विशिष्टं योगदानम्
- ❖ शोधपत्रसारांशप्रेषणस्य अन्तिमो दिनाङ्कः १५-०९-२०२२
- ❖ पूर्णशोधपत्रप्रेषणस्य अन्तिमो दिनाङ्कः ३०-०९-२०२२
- ❖ शोधपत्रसारांशं पूर्णशोधपत्रं च प्रेषयितुम् अणुसङ्केतः - ausanskrit2021@gmail.com
- ❖ संस्कृतम्/हिन्दी - Arial Unicode MS (font size- 14, single space).
- ❖ आङ्ग्लभाषा - Times New Roman (font size- 12, single space).